परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम करता है।

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

लूका 7:36 – 50 : फरीसी और पापिन स्त्री

(36) फिर किसी फरीसी ने उस से विनती की कि वह उसके साथ भोजन करे, अतः वह उस फरीसी के घर में जा कर भोजन करने बैठा। (37) उस नगर की एक पापिन स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई। (38) और उसके पांवों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई उसके पांवों को आंसुओं से भिगोने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी, और उसके पांव बार – बार चूमकर उन पर इत्र मला।

उसने ऐसा क्यों किया?

- ★ उसे विश्वास था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र, मसीहा है।
- ★ वह जानती थी कि वह पापी है।

(39) यह देखकर वह फरीसी जिसने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, "यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान जाता कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है, क्योंकि वह तो पापिनी है।"

फरीसी का क्या मानना था?

- ★ यीशु एक दिलचस्प व्यक्ति है, एक अच्छा शिक्षक।
- ★ वह स्त्री पापिन थी और वह (फरीसी) पापी नहीं है।

(40) यीशु ने उसके उत्तर में कहा, " हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।" वह बोला, "हे गुरु, कह।" (41) "किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पांच सौ और दूसरा पचास दीनार का देनदार था। (42) जब उनके पास पटाने को कुछ न रहा, तो उसने दोनों को क्षमा कर दिया। इसलिए उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा?" (43) शमौन ने उत्तर दिया, "मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।" उसने उससे कहा, " तूने ठीक विचार किया है।" (44) और उस स्त्री की ओर फिर कर उसने शमौन से कहा, "क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धोने के लिए पानी न दिया, पर इसने मेरे पांव आंसुओं से भिगाए और अपने बालों से पोंछा। (45) तूने मुझे नहीं चूमा, पर जब से मैं आया हूं तब से इसने मेरे पांवों का चूमना न छोड़ा। (46) तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, पर इसने मेरे पांव पर इत्र मला है। (47) इसलिए मैं तुझ से कहता हूं कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया; पर **जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है**।"(48) और उसने स्त्री से कहा, " तेरे पाप क्षमा हुए।" (49) तब जो लोग इसके साथ भोजन करने बैठे थे, वे अपने अपने मन में सोचने लगे, "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है? (50) पर उसने स्त्री से कहा, " तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।"

- ★ उसने विश्वास किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है तथा उसके पास पाप क्षमा करने का अधिकार है।

देना

★ विश्वास और कार्य दोनों साथ साथ चलते हैं। याकूब 2:20, 26।

परिणाम / सबसे महत्वपूर्ण और मुख्य बात - >

यीशु के लिए हमारा प्रेम

हमारे प्रेम की मात्रा प्रकट होती है - > हमारे देने में

तथा यीशु के लिए हमारा प्रेम इस बात से निर्धारित होता है कि हम किस स्पष्टता से अपने पाप और क्रूस को देखते हैं।

यीशु के लिए हमारे प्रेम की मात्रा इस बात से निर्धारित होती है कि :

1. हम कितने पश्चात्तापी हैं।
   (कितने अधिक पापी अवस्था से हम मुड़ कर हम यीशु के पास क्षमा के लिए आते हैं।)
2. दूसरों के सामने हम कितने निर्भीक हैं (वह बहुत निर्भीक है)
3. कितनी अधिक हमारी आराधना है।
4. कितना अधिक हम देते हैं।

आराधना तथा भेंट चढ़ाने के ढंग से आप अभारी पापियों को पहचान सकते हैं।

हमारे प्रेम की मात्रा /दूसरों के लिए हमारे सम्मान को हमारे कार्यों के द्वारा मापा या देखा जा सकता है।

दोनों प्रभु ... और ... हमारी पत्नी/पति के लिए

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया"

प्रेम - > देता है -> हमारे प्रेम की मात्रा इस बात से देखी जा सकती है कि कैसे हम देते हैं !
अपने आपको > अपना समय > अपनी सम्पत्ति

मत्ती 6:21
"क्योंकि जहां **तेरा धन है** वहां **तेरा मन भी** लगा रहेगा।"

दाऊद के लिए प्रभु ने कहा :
प्रेरितों के काम 13:22 "जो मेरे मन के अनुसार है, और जो मेरी सारी इच्छाएं पूरी करेगा।"

प्रभु का मन और इच्छा - लोग हैं !

लूका 19:10 "मनुष्य का पुत्र तो खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने आया है।" लोग !

देना

लूका 15:3 –7
तब उसने उनसे यह दृष्टान्त कहा : "तुम में से कौन ऐसा मनुष्य है जिसके पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक खो जाए, तो निन्यानवे को खुले चरागाह में छोड़कर, **उस खोई हुई को तब तक ढूंढता न रहे** जब तक वह मिल नहीं जाती? जब वह उसे पा लेता है तो बड़े आनन्द से कंधे पर उठा लेता है। घर पहुंचने पर वह अपने मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठा करके कहता है, मेरे साथ मिलकर आनन्द मनाओ, क्योंकि मुझे मेरी खोई भेड़ मिल गई है ! मैं तुमसे कहता हूं कि इसी प्रकार स्वर्ग में भी उन निन्यानवे धर्मियों से, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं, मन फिराने वाले एक पापी के लिए बढ़कर आनन्द मनाया जाएगा।

यीशु का हृदय लोग हैं और विशेषकर खोए हुए।

★ मिशन या मिशन के लिए जागरुक कलीसिया के लिए देना प्रभु को मनोहर लगता है।

एक हमारा जाना पहचाना पद और जिसे हम कहना चाहेंगे :

★ फिलिप्पियों 4:19 मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा।

यह वचन उनके लिए कहे गए जिन्होंने पौलुस के मिशनरी कार्यो की सहायता के लिए दान दिया था।

फिलिप्पियों 4:15–19 : (15) हे फिलिप्पियों, जैसा कि तुम स्वयं जानते हो, सुसमाचार प्रचार के कार्यों में, जब मैं मैसीडोनिया से विदा हुआ तो तुम्हें छोड़ कोई अन्य कलीसिया लेन देन के विषय में मेरे साथ सहभागी नहीं हुई। (16) इस प्रकार थिस्सलुनीके में भी तुमने मेरी सहायता के लिए एक बार ही नहीं वरन् अनेक बार दान भेजे।(17) यह बात नहीं कि मैं दान चाहता हूं, वरन् ऐसा फल चाहता हूं जो तुम्हारे लाभ के लिए बढ़ता जाए। (18) मेरे पास सब कुछ है और बहुतायत से है। तुमने इपफ्रुदीतुस के हाथ से जो दान भेजा उसे पा कर मैं सन्तुष्ट हूं। वह तो मनमोहक सुगन्ध और ग्रहणयोग्य बलिदान है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। (19) मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा।

धनवान युवा अधिकारी ने कहा :
"मैं बचपन से ही इन सारी आज्ञाओं का पालन करता आया हूं।"

वह आज्ञा मान रहा था > परन्तु उसका उद्देश्य क्या था ?
> वह किस से प्रेम करता था ?

1 शमूएल 16:7
"क्योंकि परमेश्वर का देखना मनुष्य के समान नहीं। मनुष्य तो बाहरी रुप को देखता है, परन्तु **परमेश्वर हृदय को देखता है**।"

यीशु ने उस से कहा : "तुझ में अभी भी एक बात की कमी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेचकर गरीबों में बांट दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे चल।" यह वचन सुनकर उसका मुंह म्लान हो गया

और वह दुखी होकर वहां से चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था। मरकुस 10:22 ।।

- ❖ वह वचन से प्रेम करता था/आज्ञा मानता था ... परन्तु क्यों?
- ❖ यह उसके हृदय का मामला था > जिससे वह प्रेम करता था।

मत्ती 6:21

"क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।"

प्रभु आपके हृदय के बारे में चिन्तित है ...

- ★ आपको क्या मुल्यवान है।
- ★ आप किससे प्रेम करते हैं।

आप किससे प्रेम करते हैं > > यह सब > > हृदय से सम्बन्धित है > >

जो कुछ भी हम करते हैं उसकी प्रेरणा प्रेम होनी चाहिए।

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया"

लूका 6:38 : " **दिया करो**, तो **तुम्हें भी दिया जाएगा**। वे तुम्हारी गोद में पूरा – पूरा नाप, दबा दबाकर, हिला – हिलाकर उभरता हुआ डालेंगे। क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरे को नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।

- ★ समृद्धि की कूंजी।

हमारा अगला पद 2 कुरिन्थियों 9:8

"और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हे बहुतायत से दे सकता है, जिससे कि तुम सदैव, सब बातों में परिपूर्ण रहो, और हर भले कार्य के लिए तुम्हारे पास भरपूरी से हो।"

परन्तु संदर्भ बताता है कि यह वचन उन लोगों के लिए बोला गया जिन्होंने मिशनरी कार्य के लिए सहायता दान दिया : पद 7 –15 ।

(1) यह आवश्यक नहीं कि **यरुशलेम के पवित्र लोगों के लिए की जाने वाली दान की सेवा** के विषय में मैं तुम्हें लिखूं ; (2) क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी को जानता हूं ,जिसके कारण मैं तुम्हारे विषय में मैसीडोनिया वासियों के सामने घमण्ड दिखाता हूं कि अखाया के लोग एक वर्ष से **दान भेजने को** तैयार हुए हैं, और तुम्हारे उत्साह ने और बहुतों को भी उभारा है।(3) परन्तु मैंने भाइयों को इसलिए भेजा है कि हमने जो घमण्ड तुम्हारे विषय में दिखाया, वह इस बात में व्यर्थ न ठहरे ; परन्तु जैसा मैंने कहा वैसे ही **तुम अपने इकट्ठा किए सब दान के साथ** तैयार रहो, (4) ऐसा न हो कि यदि कोई मैसीडोनियावासी मेरे साथ आए और तुम्हे तैयार न पाए, तो हो सकता है कि इस भरोसे के कारण हम (यह नहीं कहते कि तुम) लज्जित हों।(5) इसलिए मैंने भाइयों से यह विनती करना आवश्यक समझा कि वे पहले से तुम्हारे पास जाएं, और तुम्हारी

उदारतापूर्ण दान का फल जिसके विषय में पहले से वचन दिया गया था, तैयार कर रखें कि **यह दान उदारता से दिया जाए, न कि दबाव से।** (6) परन्तु बात यह है : जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा काटेगा भी ; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। (7) **हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे** ; न कुड़ कुड़ के और न दबाव से, **क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है।** (8) और परमेश्वर सब प्रकार की **तुम्हारी आवश्यकताएं उदारतापूर्वक तुम्हे बहुतायत से देगा,** जिससे कि तुम सदैव, सब बातों में परिपूर्ण रहो, और हर भले कार्य के लिए तुम्हारे पास भरपूरी से हो।(9) जैसा लिखा है, "उसने बिखेरा, उसने कंगालों को दान दिया , उसका धर्म सदा बना रहेगा।" (10) अतः जो बोने वाले को बीज और भोजन के लिए रोटी देता है, वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा।(11) तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिए जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, **धनवान किए जाओ**।(12) क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से न केवल पवित्र लोगों की आवश्यकताएं पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का भी बहुत धन्यवाद होता है।(13) क्योंकि इस सेवा को प्रमाण स्वीकार कर वे परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उसके अधीन रहते हो, और **उनकी और सबकी सहायता करने में उदारता प्रगट करते हो।**(14) ओर वे तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं ; और **इसलिए कि तुम्हारे द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट हुआ है।**(15) परमेश्वर का, उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो।

उदाहरण : इब्राहीम

उत्पत्ति 12:1–3 तब यहोवा ने अब्राम से कहा,
"अपने देश से चला जा, (आज्ञा मानी) ... और मैं तुझे आशिष दूंगा।"

उत्पत्ति 22:12–18 इसहाक का बलिदान

उसने कहा, "उस लड़के की ओर हाथ न बढ़ा, ... मैं अब जान गया हूं कि तू परमेश्वर से डरता है, क्योंकि तू ने मेरे लिए अपने पुत्र अर्थात अपने **एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा**।" ... इब्राहीम ने उस स्थान का नाम **यहोवा उपाय करेगा** रखा। "यहोवा यह कहता है : क्योंकि तू ने यह काम किया है कि अपने पुत्र वरन् अपने **एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, इस कारण** मैं अपनी शपथ खाकर कहता हूं कि **मैं तुझे निश्चय ही बड़ी आशिष दूंगा**।"

जिस नाप से तुम दूसरे को नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।

मलाकी 3:8 – 12 देने के विषय में परमेश्वर ने कहा :
"क्या मनुष्य परमेश्वर को लूट सकता है? फिर भी तुम मुझे लूटते हो! परन्तु तुम पूछते हो, 'हमने किस बात में तुझे लूटा है?' **दशमांश और भेंटों** में। तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो ; वरन् सारी जाति ऐसा करती है! सेनाओं के यहोवा का यह वचन है ; **सारे दशमांश** भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे, और **ऐसा कर के मुझे परखो,** कि मैं तुम्हारे लिए आकाश के झरोखे खोल कर, तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशिष की वर्षा करता हूं कि नहीं। तब मैं तुम्हारे लिए नाश करने वाले को ऐसा घुड़कूंगा कि व तुम्हारी भूमि की उपज को नाश न करेगा; न ही तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे गिरेंगे,सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

दशमांश का नियम, पुराने नियम की व्यवस्था का भाग नहीं है।

★ जिस प्रकार इब्राहीम के साथ वाचा और वायदे, व्यवस्था के दिए जाने के 400 वर्ष पूर्व के थे तथा व्यवस्था के भाग न थे (गलातियों 3:17), उसी प्रकार दशमांश भी था। इब्राहीम ने मलिकिसिदक को दशमांश दिया (इब्रानियों 7:1 – 2) "इब्राहीम सब विश्वास करने वालों का पिता ठहरा।" रोमियों 4:11 ।।

★ नए नियम के विश्वासियों के लिए, पुराना नियम : "... दृष्टान्त है, और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं।" 1 कुरिन्थियों 10:11 ।।

दशमांश और दान देने में प्रवृत्ति
दी बरना ग्रुप के द्वारा 2007 में किए गए नए अध्ययन से यह उद्घाटित हुआ है कि सिर्फ पांच प्रतिशत अमरीकी वयस्क दशमांश (जिन्होंने अपनी आय का कम से कम दस प्रतिशत धार्मिक संस्थानों या दूसरे सहायतार्थ संस्थानों में दिया है) देते हैं।

★ यहोशु 6:17–19, 24 ; 7:1,11 – 13
★ नीतिवचन 3:9 – 10

1 कुरिन्थियों 4:2–3 भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो।

यह सत्य मत्ती 25:14 –30 से लिया गया है :
(14)"फिर, यह उस मनुष्य के समान है जो यात्रा पर जाने को था और जिसने **अपने दासों को बुला कर अपनी सम्पत्ति उनको सौंप दी**।

★ परमेश्वर ने अपनी सम्पत्ति हमें सौपी है : उत्पत्ति 1:28 ; प्रकाशितवाक्य 5:9 (उसकी सबसे बहुमूल्य अमानत)
★ भण्डारीपन का अर्थ है कि किसी दूसरे की सम्पत्ति की ऐसी देखभाल करना जैसे अपने की।

1 कुरिन्थियों 4:7 : और तेरे पास क्या है जो तू ने परमेश्वर से नहीं पाया? और जब कि सब कुछ तू ने परमेश्वर से पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है कि मानो तू ने सब कुछ अपने से पाया है ?

(15) उसने एक को **पांच** तोड़े, दूसरे को **दो**, और तीसरे को **एक**, अर्थात प्रत्येक को उसकी योग्यता के अनुसार दिया, और यात्रा पर चला गया।

★ उसके दासों की योग्यता बराबर नहीं थी जैसे भण्डारियों की। कुछ दूसरों से अधिक गुणवान या अनुभवी थे।
★ उन दिनों में एक तोड़ा चांदी में 50,000 रु थे। आज के दिन उस का खरीद मुल्य

करीब 10,000,000 रु होगा।

(16) जिसे पांच तोड़े मिले थे, उसने तुरन्त जा कर उनसे व्यापार किया और **पांच तोड़े और कमाए**।(17) इसी प्रकार जिसे दो तोड़े मिले थे, उसने भी **दो और कमाए**। (18) पर वह जिसे एक मिला था, उसने जा कर भूमि खोदी और **अपने स्वामी के तोड़े को उसने छिपा दिया**।

(19) "बहुत दिनों के पशचात उन दासों का स्वामी आया और उनसे **लेखा लेने** लगा।

★ 1 कुरिन्थियों 3:8 –15 ; 9:16 –27

(20)तब वह जिसे पांच तोड़े मिले थे, उसने पांच तोड़े और ला कर कहा, 'स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे। देख, मैंने इनसे **पांच और कमाए हैं**।' (21) उसके स्वामी ने उससे कहा, ' शाबाश, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तू थोड़े में ही विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी ठहराऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'

(22) "वह जिसे दो तोड़े मिले थे, उसने आ कर कहा, 'स्वामी, तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे। देख, मैंने **दो और कमाए हैं**। (23) स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तू थोड़े ही में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत सी वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'

(24) "तब वह भी जिसे एक तोड़ा मिला था आ कर कहने लगा, 'हे स्वामी, मैं जानता था कि तू कठोर मनुष्य है ; जहां नहीं बोता वहां काटता है और जहां नहीं बिखेरता वहां से बटोरता है।(25) अतः **मैं डर गया** और जा कर **तेरे तोड़े को मैंने भूमि में छिपा दिया**। देख, जो तेरा है उसे ले ले।'

(26) परन्तु उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, ' हे दुष्ट और आलसी दास, तू यह जानता था कि जहां मैं नहीं बोता वहां से काटता हूं , और जहां बीज नहीं बिखेरता वहां से बटोरता हूं ; (27) तब तो तुझे चाहिए था कि मेरा धन साहूकारों के पास रख देता, जिससे कि **मैं आ कर अपना धन ब्याज समेत उन से ले लेता**।(28) इसलिए इस से **वह तोड़ा भी ले लो** और जिसके पास दस हैं, इसे दे दो।

(29) क्योंकि प्रत्येक जिस के पास है उसको और भी दिया जाएगा और उसके पास बहुत हो जाएगा। परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है। (30) इस निकम्मे दास को बाहर के अंधियारे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा।'

सफलता अन्त नहीं है, असफलता घातक नहीं है : यह आगे बढ़ने का साहस है जो महत्वपूर्ण है।